كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِٱلْمَعْرُوفِ
وَتَنْهَوْنَ عَنِ ٱلْمُنكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ ۗ وَلَوْ ءَامَنَ أَهْلُ
ٱلْكِتَٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُم ۚ مِّنْهُمُ ٱلْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ
ٱلْفَٰسِقُونَ ﴿١١٠﴾ لَن يَضُرُّوكُمْ إِلَّآ أَذًى ۖ وَإِن يُقَٰتِلُوكُمْ يُوَلُّوكُمُ
ٱلْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنصَرُونَ ﴿١١١﴾ ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ ٱلذِّلَّةُ أَيْنَ مَا
ثُقِفُوٓا۟ إِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ ٱللَّهِ وَحَبْلٍ مِّنَ ٱلنَّاسِ وَبَآءُو بِغَضَبٍ
مِّنَ ٱللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ ٱلْمَسْكَنَةُ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا۟
يَكْفُرُونَ بِـَٔايَٰتِ ٱللَّهِ وَيَقْتُلُونَ ٱلْأَنۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ ذَٰلِكَ
بِمَا عَصَوا۟ وَّكَانُوا۟ يَعْتَدُونَ ﴿١١٢﴾ ۞ لَيْسُوا۟ سَوَآءً ۗ مِّنْ أَهْلِ
ٱلْكِتَٰبِ أُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَتْلُونَ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ ءَانَآءَ ٱلَّيْلِ وَهُمْ
يَسْجُدُونَ ﴿١١٣﴾ يُؤْمِنُونَ بِٱللَّهِ وَٱلْيَوْمِ ٱلْـَٔاخِرِ وَيَأْمُرُونَ
بِٱلْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ ٱلْمُنكَرِ وَيُسَٰرِعُونَ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ ۖ
وَأُو۟لَٰٓئِكَ مِنَ ٱلصَّٰلِحِينَ ﴿١١٤﴾ وَمَا يَفْعَلُوا۟ مِنْ خَيْرٍ فَلَن
يُكْفَرُوهُ ۗ وَٱللَّهُ عَلِيمٌۢ بِٱلْمُتَّقِينَ ﴿١١٥﴾ إِنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَن
تُغْنِىَ عَنْهُمْ أَمْوَٰلُهُمْ وَلَآ أَوْلَٰدُهُم مِّنَ ٱللَّهِ شَيْـًٔا ۖ وَأُو۟لَٰٓئِكَ
أَصْحَٰبُ ٱلنَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَٰلِدُونَ ﴿١١٦﴾ مَثَلُ مَا يُنفِقُونَ فِى
هَٰذِهِ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ
قَوْمٍ ظَلَمُوٓا۟ أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ ٱللَّهُ وَلَٰكِنْ
أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَتَّخِذُوا۟ بِطَانَةً

مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا۟ مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ
ٱلْبَغْضَآءُ مِنْ أَفْوَٰهِهِمْ وَمَا تُخْفِى صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ ۚ قَدْ بَيَّنَّا
لَكُمُ ٱلْءَايَٰتِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾ هَٰٓأَنتُمْ أُو۟لَآءِ تُحِبُّونَهُمْ
وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِٱلْكِتَٰبِ كُلِّهِۦ ۖ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوٓا۟
ءَامَنَّا وَإِذَا خَلَوْا۟ عَضُّوا۟ عَلَيْكُمُ ٱلْأَنَامِلَ مِنَ ٱلْغَيْظِ ۚ قُلْ
مُوتُوا۟ بِغَيْظِكُمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ ٱلصُّدُورِ ﴿١١٩﴾ إِن
تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِن تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا۟
بِهَا ۖ وَإِن تَصْبِرُوا۟ وَتَتَّقُوا۟ لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا ۗ إِنَّ ٱللَّهَ
بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿١٢٠﴾

Theme	
Muslims are the best nation evolved to enjoin good and forbid evil. Some righteous People of the Book. Hypocritical charity. Intimate friendship should be only with the believers.	मुसलमान बेहतरीन उम्मत हैं, जिन्हें नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने के लिए उठाया गया है। अहल-ए-किताब में कुछ नेक लोग भी हैं। मुनाफ़िक़ाना सदक़ा व ख़ैरात। गहरी दोस्ती सिर्फ़ अहल-ए-ईमान के साथ होनी चाहिए।
Tarjumani	
You are the best nation which has ever been raised for the guidance of mankind. You enjoin good, forbid evil, and believe in Allah. Had the	अब दुनिया में वह बेहतरीन गरोह तुम हो जिसे इनसानों की हिदायत व इस्लाम के लिए मैदान में लाया गया है	तुम नेकी का हुक्म देते हो, बदी

People of the Book (Jews and Chris-tians) believed, it would surely have been better for them; among them some are believers but most of them are transgressors. Anyhow, they can do no harm to you except a trifling annoyance; if they do fight against you, they will turn their backs and run away, getting no help from anywhere. Disgrace will be branded on them wherever they are found except when they are under a covenant of protection from Allah and from other people; they have incurred the wrath of Allah. They have been branded with misery because they disbelieved Allah's revelations and slew His prophets unjustly. This is because they disobeyed and transgressed the limits. Yet, they are not all alike: there are some among the People of the Book who are upright, who recite the revelations of Allah all night long and then prostrate before Him. They believe in Allah and the Last Day, they enjoin good and	से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो	ये अहले-किताब ईमान लाते तो इन्हीं के हक़ में बेहतर था	अगरचे इनमें कुछ लोग ईमानदार भी पाए जाते हैं, मगर इनके बेशतर अफ़राद नाफ़रमान हैं	ये तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते, ज़्यादा से ज़्यादा बस कुछ सता सकते हैं	अगर ये तुमसे लड़ें तो मुक़ाबले में पीठ दिखाएँगे, फिर ऐसे बेबस होंगे कि कहीं से इनको मदद न मिलेगी	ये जहाँ भी पाए गए इनपर ज़िल्लत की मार ही पड़ी, कहीं अल्लाह के ज़िम्मे या इनसानों के ज़िम्मे में पनाह मिल गई तो यह और बात है	ये अल्लाह के ग़ज़ब में घिर चुके हैं, इनपर मुहताजी व मगलूबी मुसल्लत कर दी गई है, और यह सब कुछ सिर्फ़ इस वजह से हुआ है कि ये अल्लाह की आयात से कुफ़्र करते रहे और उन्होंने पैगम्बरों को नाहक क़त्ल किया	यह उनकी नाफ़रमानियों और ज्यादतियों का अंजाम है	मगर सारे अहले-किताब यकसाँ नहीं हैं	इनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो राहे-रास्त पर क़ायम हैं, रातों को अल्लाह कि आयात पढ़ते हैं और उसके आगे सजदारेज़ होते हैं, अल्लाह और रोज़े-आख़िरत पर ईमान रखते हैं, नेकी का

forbid evil and rush in emulating each other in good deeds. These are the righteous people. Whatever good they do, its reward will not be denied to them; Allah knows the pious. Surely, for those who are unbelievers, neither their wealth nor their children shall in the least protect them from the wrath of Allah; they will be the inmates of the Hellfire and live therein forever. Example of what they spend in this life is that of a freezing wind which strikes and destroys the tillage of people who have wronged themselves (it is the lack of faith which makes their reward null and void); Allah is not unjust to them; it is they who have done injustice to their own souls. O believers! Do not make intimate friendships with any but your own people. The unbelievers will not miss any opportunity to corrupt you. They desire nothing but your destruction: their malice has become evident from what they	हुक्म देते हैं, बुराइयों से रोकते हैं और भलाई के कामों में सरगर्म रहते हैं	ये सालेह लोग हैं, और जो नेकी भी ये करेंगे उसकी नाक्द्री न की जाएगी,अल्लाह परहेज़गार कोगों को ख़ूब जानता है	रहे वे लोग जिन्होंने कुफ़्र का रवैया इखतियार किया तो अल्लाह के मुक़ाबले में उनको न उनका माल कुछ काम देगा न औलाद, वे तो आग में जानेवाले लोग हैं और आग ही में हमेशा रहेंगे	जो कुछ वे अपनी इस दुनिया की ज़िन्दगी में ख़र्च कर रहे हैं उसकी मिसाल उस हवा की-सी है जिसमें पाला हो और वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्होंने अपने ऊपर आप जुल्म किया है और उसे बरबाद करके रख दे	अल्लाह ने इनपर ज़ुल्म नहीं किया, दरहकीकत ये ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म कर रहे हैं	ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपनी जमाअत के लोगों के सिवा दूसरों को अपना राज़दार न बनाओ, वे तुम्हारी ख़राबी के किसी मौक़े से फ़ायदा उठाने में नहीं चुकते	तुम्हें जिस चीज़ से नुकसान पहुँचे वही उनको महबूब है	उनके दिल का बुग्ज़ उनके मुहँ से निकला पड़ता है और जो कुछ वे अपने सीनों में छिपाए हुए हैं वह इससे शदीदतर है	

say, and what they conceal in their hearts is far worse. We have made Our revelations plain to you, if you want to comprehend. Whereas you love them, they do not love you even though you believe in their Holy Books (the Psalms, the Torah, and the Gospels). When they meet you, they say "We also believe in your prophet and your Quran;" but when they are alone, they bite their fingertips in rage against you. Say to them: "May you perish in your rage;" surely. Allah knows all the secrets of the heart. When you are blessed with good fortune, they grieve; but if some misfortune overtakes you, they rejoice. If you are patient and guard yourselves against evil, their schemes will not harm you in any way. Surely, Allah encompasses their actions.	हमने तुम्हें साफ़-साफ़ हिदायत दे दी हैं, अगर तुम अक्ल रखते हो (तो उनसे तअल्लुक रखने में एहतियात बरतोगे)	तुम उनसे मोहब्बत रखते हो मगर वे तुमसे मोहब्बत नहीं रखते, हालाँकि तुम तमाम कुतुबे-आसमानी को मानते हो जब वे तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं कि हमने भी (तुम्हारे रसूल और तुम्हारी किताब को) मान किया है, मगर जब जुदा होते हैं तो तुम्हारे ख़िलाफ़ गैज़ो-ग़ज़ब का यह हाल होता है कि अपनी उँगलियाँ चबाने लगते हैं--- उनसे कह दो कि अपने गुस्से में आप जल मरो, अल्लाह दिलों के छिपे हुए राज़ तक जानता है --- तुम्हारा भला होता है तो इनको बुरा मालूम होता है, और तुमपर कोई मुसीबत आती है तो ये ख़ुश होते हैं	मगर इनकी कोई तदबीर तुम्हारे ख़िलाफ़ कारगर नहीं हो सकती बशर्ते कि तुम सब्र से काम लो अल्लाह से डरकर काम करते रहो	जो कुछ ये कर रहे हैं अल्लाह उसपर हावी है	
Tafsir	